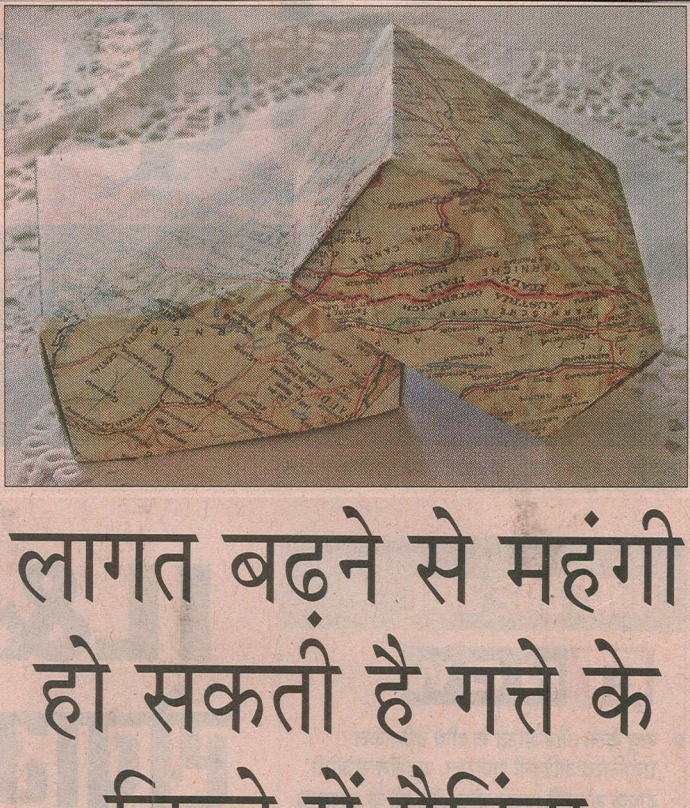

लागत बढ़ने से महंगी हो सकती है गत्ते के डिब्बे में पैकिंग

कारोबारी कर रहे हैं कीमत बढ़ाने पर विचार

ईटी ब्यूरो
नई दिल्ली

कंज्यूमर गुड्स मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री के लिए गत्ते के डिब्बे (कॉरुगेटेड बॉक्स) बनाने वाले कारोबारी इन दिनों लागत बढ़ने से मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। पिछले कुछ समय में ईंधन, मजदूरों के वेतन और स्टार्च जैसे कच्चे माल की कीमत में बढ़ोतरी की वजह से अब ये डिब्बे के दाम में 20 फीसदी तक इजाफा करने की तैयारी में हैं। इन डिब्बों का इस्तेमाल फूड प्रोसेसिंग, फार्मा, अपैरल, एफएमसीजी, कंज्यूमर ड्यूरेबल, बेवरेज और फूड एंड वेजिटेबल कंपनियां भारी मात्रा में करती रहती हैं।

इंडियन कॉरुगेटेड केस मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट किरीट मोदी के मुताबिक, पिछले साल से तुलना करें तो कॉरुगेटेड बॉक्स बनाने में इस्तेमाल किए जाने सभी तरह के कच्चे माल की कीमतें दोगुनी हो चुकी हैं। डिब्बों की सिलाई में स्टील के तार का इस्तेमाल किया जाता है और स्टील के दामों में पिछले कुछ महीने में काफी वृद्धि हुई है। इसके अलावा वेस्ट पेपर की कीमतें एक साल में 180 डॉलर प्रति टन से 320 डॉलर प्रति टन तक पहुंच चुकी है।

उन्होंने बताया, 'मैन्युफैक्चरर्स कॉरुगेटेड बॉक्स के दाम में 20 फीसदी तक का इजाफा करने की तैयारी में हैं। ऐसे में मार्च से कंज्यूमर गुड्स मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री को इन बॉक्स को लिए ज्यादा कीमत चुकानी होगी। हालांकि इसका भार कहीं न कहीं आम उपभोक्ताओं पर ही डाला जाएगा।'

सिक्योरि पैक्स पैकेजिंग के डायरेक्टर हरीश मदान ने बताया कि कॉरुगेटेड बॉक्स मैन्युफैक्चरिंग इकाइयों का टर्नओवर करीब 10,000 करोड़ रुपए है। इस सेक्टर में फिलहाल 30,000 छोटी इकाइयां और 200 इकाइयां ऐसी हैं, जो कि मशीनों के माध्यम से पूरी मैन्युफैक्चरिंग करती हैं। सेक्टर में तकरीबन 1 लाख कर्मचारी काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'सभी तरह की इकाइयों पर फिलहाल काफी दबाव है। राजधानी में मजदूरों के न्यूनतम वेतन में बढ़ोतरी से स्थानीय इकाइयों की परेशानियां ज्यादा बढ़ी हैं। यही वजह है कि हमारे पास कीमतें बढ़ाने के अलावा दूसरा कोई विकल्प मौजूद नहीं हैं।'

बढ़ी लागत

पिछले साल की तुलना में कॉरुगेटेड बॉक्स बनाने में इस्तेमाल किए जाने सभी तरह के कच्चे माल की कीमतें दोगुनी हो चुकी हैं। डिब्बों की सिलाई में स्टील के तार का इस्तेमाल किया जाता है और स्टील के दामों में पिछले कुछ महीने में वृद्धि हुई है

गौरतलब है कि अलग-अलग उत्पादों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कॉरुगेटेड बॉक्स की कीमत भी अलग है। उदाहरण के तौर पर बिस्कुट के बॉक्स की कीमत 20 रुपए है, टीवी का बॉक्स 100 रुपए तो रेफ्रिजरेटर के डिब्बे के लिए कंज्यूमर ड्यूरेबल कारोबारियों को 150 रुपए तक चुकाने पड़ते हैं। फ्लैक्सी पैक्स के प्रबंधक सोम चंद्रा के मुताबिक, 'अगर बजट में सरकार पैकेजिंग इंडस्ट्री को राहत देती है तो हो सकता है कि कीमतों में इतना इजाफा न किया जाए, वरना मार्च में वृद्धि तय है। ऐसे में मैन्युफैक्चरर अपने नए ऑर्डर बढ़े हुए दाम के मुताबिक ही लेंगे। हालांकि पुराने ऑर्डर को पुरानी कीमतों पर ही पूरा किया जाएगा।'